English

setuu अध्याय 20

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

युवा प्रभु राम का ताड़का के जंगल में शिव योग

अगले दिन ब्रह्ममुहूर्त में चरण पूजा का सातवाँ सत्र शुरू हुआ | इस सत्र के यजमान थे प्रणव नामक एक मातंग पुरुष | उसकी आत्मा को पवित्र करने के लिए हनुमान जी ने भगवान् राम की ताड़का के जंगल में लीलाओं का बखान किया |

हनुमान जी बोले – "हे मातांगो , जब प्रभु राम वयस्क हुए , उन्होंने जिस काम के लिए धरती पर जन्म लिया था उस काम की शुरुआत करने में भूमिका निभाने का अवसर ऋषि विश्वामित्र को मिला | अयोध्या के बड़े राजकुमार राम और लक्षमण अपने महल की सुख सुविधाओं को छोड़कर असुरो के साथ अपने पहले सीधे सामने के लिए चल पड़े |

"शाही रथ उन्हें राज्य की सीमा तक छोड़ने आया जहाँ से वे नंगे पाँव सन्यासियों की भांति चल पड़े : उनके पैर धरती को इतने हलके से छू रहे थे जैसे धरती का चुम्बन ले रहे हों , उनका मन पूर्णतः वर्तमान क्षण में था , और वे भूत और भविष्य के विचारों से पूर्णतया मुक्त थे | ऋषि विश्वामित्र उन्हें ऋषियों और देवो की कहानियां सुना रहे थे और रात दिन ऐसे गुजर रहे थे जैसे स्वागत कालीन बिछता चला जा रहा हो |

"एक दोपहर जब उन्होंने खाना खाकर अपनी यात्रा पुनः शुरू की , उन्हें सामने बादलों से कुछ अशुभ होने का आभास हुआ – अजीब व अशुभ घने गहरे हरे रंग के बादल दूर क्षितिज पर दिखाई दे रहे थे | लक्षमण का हाथ अनायास ही तरकश पर चला गया | श्री राम शांत परन्तु सावधान रहे |

""वहां पर वे रहस्यमय बादल देख रहे हो?" ऋषि विश्वामित्र ने उनकी चिंतापूर्ण जिज्ञासा को शांत करने की पहल की – "वे बादल नहीं हैं | वे वृक्ष हैं | ताड़का के जंगल के वृक्ष | वह जंगल हमारी इस यात्रा का एक पड़ाव है |"

"जैसे ही वे थोडा सा आगे बढे , उन्हें अहसास हुआ कि क्षितिज पर गहरे हरे रंग का वो गुब्बार असल में वहां के वृक्षों के शिखरों के कारण प्रतीत हो रहा था | उनके कदम अनायास ही तेज हो गए थे जैसे कोई चीज उन्हें जंगल की ओर खींच रही हो | राम जी ने देखा कि छोटे वृक्षों और झाड़ियों के बीच होते हुए जो रास्ता जंगल की ओर जा रहा था वह संदेहास्पद रूप से साफ़ था , उस पर कोई काँटा या टूटी टहनी नहीं पड़ी थी |

"ताड़का के जंगल का वह रास्ता वे तुरंत पूरा कर लेते अगर कोई अड़चन नहीं आती , और अड़चन आई एक आदमी की सहायता की चीखो के रूप में जिसके पीछे गुस्साए हाथियों का एक झुण्ड पड़ा था | पहले तीर लक्षमण ने चलाए | लक्षमण ने तीरों से छोटे छोटे वृक्ष उखाड़कर हाथियों के रास्ते में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास किया | जब राजकुमार राम एक जगह शांत खड़े होकर हालात का जायजा ले रहे थे , लक्षमण जी झुरमुटो में से दोड़ते हुए तीर चला रहे थे |

"थोडा सोच विचार करने के पश्चात् युवा श्री राम लक्षमण के पीछे दोड़े लेकिन उन्होंने एक भी तीर नहीं चलाया | लक्षमण अकेले ने हाथियों को भगा दिया और उस आदमी के पास पहुंचे जो बुरी तरह से घायल था | "मुझे अपने गुरुदेव के आश्रम ले चलो |" घायल आदमी ताड़का के जंगल के दूसरी दिशा में इशारा करते हुए बुदबुदाया |

"राम जी किसी कारण से अनिर्णय की अवस्था में लग रहे थे | लक्ष्मण ने उस आदमी को अपनी बांहों में उठा लिया और उस आश्रम की ओर दोड़ने लगे | राम जी ने अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे वे अपने किसी हिस्से को चल रही घटनाओं में शामिल रखना चाह रहे थे | "वही पर रूको, लक्ष्मण|" राम जी चिल्लाये – "कुछ गलत प्रतीत हो रहा है | ये भ्रमजाल हो सकता है |"

""लेकिन बुरा भ्रम जाल नहीं है |" ऋषि विश्वामित्र वहां पहुँच गए थे | वे बोले – "मैंने लोगो को ताड़का के जंगल में जाने से बचाने के लिए यहाँ पर कई भ्रम जाल बिछा रखे हैं | यह भी उन्ही में से एक है | देखो, तुम लोग ताड़का के जंगल की ओर जा रहे थे लेकिन इस जाल ने तुम्हे विपरीत दिशा दे दी |"

"श्री राम जी ने आराम की सांस ली | लक्ष्मण वहां पर उस मनुष्य कि भांति स्थिर खड़े थे जिसे अभी अभी पता चला हो कि वह दलदल में खड़ा है | उन्हें नहीं पता था कि वे उस घायल मनुष्य की देह का क्या करे जिसे उन्होंने बांहों में उठा रखा था | ऋषि विश्वामित्र बोले – "वत्स, ताड़का के जंगल में प्रवेश करने से पहले मैं आपको इस तरह के भ्रम का अनुभव देना चाहता था |"

"राम जी बोले – "गुरुदेव , मेरा एक हिस्सा जागृत था कि यह कोई कृत्रिम हालात थे | लेकिन मेरा दूसरा हिस्सा इन घटनाओं के साथ फिसलता चला गया |"

"लक्ष्मण जी की बाहों में पड़े मनुष्य ने कराहना बंद कर दिया और अचेत हो गया | उस देह की और इशारा करते हुए ऋषि विश्वामित्र बोले – "हे दशरथ पुत्रों , यह मनुष्य हम तीनो को दिखाई दे रहा है | आप कैसे कह सकते हो कि यह असली नहीं बल्कि भ्रम है | तुम इस देह का भार महसूस कर सकते हो , हैं ना लक्ष्मण ?"

""बहुत ज्यादा |" लक्ष्मण जी ने मुंह बनाया | उन्होंने आशा कि थी कि विश्वामित्र जी उन्हें देह को नीचे धरती पर लेटाने के लिए कहेंगे लेकिन उन्हें ऐसे किसी आराम की आज्ञा नहीं मिली |

""मैंने इस आदमी को मेरे मन की शक्ति से प्रकट किया है , बिलकुल एक विचार की तरह | मेरे विचार मेरे ही रहते हैं जब तक कि मैं किसी अन्य को उन विचारों से सहमत न करा दूं | ठीक उसी तरह यह मनुष्य भी केवल मुझे दिखाई देना चाहिए जब तक कि मैं इसे आपके जीवन में न उतार दूं | मैंने ऐसा कैसे किया?" ऋषि विश्वामित्र से अपनी नजरे लक्ष्मण और राम के बीच दौड़ते हुए पुछा |

"राजकुमार राम ने शांति से उत्तर दिया – "मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं दो भागो में बंट गया था गुरुदेव | मेरा एक भाग कह रहा था कि यह भ्रम है लेकिन मेरा दूसरा भाग इस मनुष्य के प्रति दया और लक्ष्मण के प्रति चिंता में भर गया था क्योंकि लक्ष्मण इस मनुष्य की सहायता के लिए बिना विचार किये दौड़ पड़ा था |"

""एक भाग था सत्य-राम और दूसरा भाग था माया-राम | माया-राम की रचना मैंने की थी | तो कौन जीता : माया-राम या सत्य-राम?"

""कोई भी नहीं गुरदेव|" राजकुमार राम ने उत्तर दिया – " मैं दोनों के बीच कशमकश में रहा |"

""तो ऐसा कहे कि माया-राम और सत्य-राम के बीच रस्साकसी चल रही थी | माया-राम ने सत्य-राम को दया और चिंता की रस्सी से अपनी ओर खींचने का प्रयास किया किन्तु असफल रहा |" ऋषि विश्वामित्र बोले और लक्ष्मण की तरफ एक नजर दौड़ाई यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे उन्हें ध्यान से सुन रहे थे |

“अपने विचारो को सुनियोजित करते हुए राम जी शांति से बोले – “गुरुदेव , मैंने अब तक यह समझा : आपने इस आदमी को अपने मन की शक्ति से रचा | मुझे यह विश्वास दिलाने के लिए कि यह मनुष्य वास्तविक है , आप एक कदम आगे गए और आपने एक माया-राम रचा | माया-राम ने सत्य-राम को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि यह मनुष्य और उसकी सहायता की चीख वास्तविक थी |”

““हाँ , इस वार्तालाप के लिए इतनी समझ काफी है |” ऋषि विश्वामित्र के चेहरे पर संतुष्टि की लहर दौड़ गई | लक्ष्मण के मुरझाये चेहरे पर भी राजकुमारों वाली चमक पुनः लौट आई क्योंकि उनकी बाहों में जो मनुष्य था वह गायब हो गया |

“ऋषि विश्वामित्र आगे बोले – “आपको इस चीज का सपष्ट प्रतिपादन ताड़का के जंगल में देखने को मिलेगा | अभी तो आपको इतना याद दिलाना काफी है कि ऐसे भ्रम का इलाज केवल शिव योग है | मैं ये मान सकता हूँ कि ऋषि वशिष्ट ने आपको शिव योग सिखाया होगा लेकिन आपमें से किसी ने भी इसे पूरी तरह नहीं सीखा है | अब , लक्ष्मण , तुम अपने दिमाग पर जोर डालो और बताओ शिव योग क्या है?”

“लक्ष्मण के चेहरे पर अपराधबोध उमड़ आया और बोले – “गुरुदेव , किसी भी हालात पर प्रतिक्रिया देने से पहले हमें एक पल के लिए रूक जाना चाहिए और शिव योग का अभ्यास करना चाहिए | उस क्षण में हमें शिव की तरह हो जाना चाहिए : हर भावना से उदासीन और हर चीज से अनासक्त | उस क्षण में हमें निर्णय लेना चाहिए कि उस हालात में कैसे प्रतिक्रिया देनी है |”

““लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया |” विश्वामित्र ने कड़ाई से कहा , “तुमने उस आदमी की सहायता की चीखों को सुनकर प्रतिक्रिया देने से पहले एक क्षण का विराम नहीं लिया | एक क्षण के लिए तुम्हे शिव योग करना चाहिए था लेकिन तुमने नहीं किया | और तुम राम –“ विश्वामित्र जी राम जी को भी उतनी की कड़ाई से बोले – “जब शिव-योग-क्षण में तुम कोई निर्णय करो तो उस निर्णय पर अडिग रहो | अगर कोई संदेह रहता है तो पुनः शिव योग क्षण में चले जाओ और अपने संदेह दूर कर लो |”

“विश्वामित्र ने राजकुमारों के किसी उत्तर का इन्तजार नहीं किया | वे पीछे मुड़े और उस रास्ते की ओर बढ़ चले जो ताड़का जंगल की ओर जाता था | लक्ष्मण को आभास हुआ कि उनके पैरों पर बुरी तरह खरोंचे आ गई थी | राम जी ने झुककर अपने भाई के पैरो को देखा | लक्ष्मण ने राम जी के कंधो पर हाथ रखकर एक एक करके पैर उठाये और राम जी ने उनके कांटे निकाले | उसके बाद राम जी आराम से लक्ष्मण को साफ़ रास्ते पर ले आये जहाँ पर विश्वामित्र चारो ओर निरिक्षण कर रहे थे कि कही कोई संभावित खतरा तो नहीं मंडरा रहा था |

“जब वे ताड़का के जंगल की ओर चलने लगे तो विश्वामित्र जी बोले – “हे युवको , इस जंगल में प्रवेश करने से पहले मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि ताड़का एक राक्षसी कैसे बनी |” आत्मग्लानि की सांस लेते हुए वे आगे बोले – “एक ऋषि होने के नाते मुझे यह स्वीकार करने में तनिक भी झिझक नहीं है कि ऋषि समाज भी इस राक्षसी के उदय के लिए उतना ही जिम्मेदार है |”

“छोटे से विचारात्मक अंतराल के पश्चात् विश्वामित्र जी ने गहरी सांस ली और बोले – “मैं वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ विद्रोही रहा हूँ | इसलिए मेरे अपने पूर्वाग्रह हैं , मैं जानता हूँ | मैं अपने पूर्वाग्रहों से आपके मन को कलुषित नहीं करना चाहता | इसलिए मैं ताड़का के जीवन के बारे में मात्र तथ्य बताऊंगा | बहुत छोटी सी उम्र में ही ताड़का के मन में ‘मैं कौन हूँ’ का प्रश्न कचोट उठा था और उसे वह चिंगारी मिल गई थी जो उसे ब्रह्मज्ञान के रास्ते पर ला सकती थी | ऐसी लड़की के प्रति समाज का रवैया क्या होना चाहिए?”

“राजकुमार राम किसी प्रश्न की अपेक्षा नहीं कर रहे थे | उन्होंने अपना गला साफ़ किया और बोले – “आदर्शतः उसे कोई गुरु मिलना चाहिए था और उसकी सर्वोच्च मार्ग पर यात्रा प्रारंभ हो जानी चाहिए थी |”

““मुझे यहाँ पर यह बताना जरूरी है कि वह जंगल में रहने वाले निषादों के परिवार से थी | अर्थात वह ऐसी पारिवारिक परंपरा से सम्बन्ध रखती थी जहाँ , उदाहरणतः , भोजन ,सुख , व परंपरा के लिए मासूम जानवरों की हत्या आम बात थी | वर्तमान व्यवस्था में ऋषि निषादों को अपना शिष्य

स्वीकार नहीं करते | पृथु समाज से यह अपेक्षा की जाती है कि वे निषाद समाज के उभरते प्रतिभावान सत्यसाधको को खोजे और उन्हें निषाद स्तर से उठाकर पृथु स्तर पर लाने में सहायता करें |"

""मुझे इसमें कोई समस्या नजर नहीं आती , गुरुदेव |" लक्ष्मण के मुख से अनायास ही ये शब्द निकल गए | वे झिझकते हुए आगे बोले – "मेरा मतलब ... अगर वो निषाद थी तो पृथु समाज द्वारा समय समय पर आयोजित की जाने वाली गतिविधियों में अपना हुनर दिखा सकती थी | अयोध्या में ऐसे बहुत से कार्यक्रम होते हैं जिनमे पृथु लोग प्रतिभावान निषादों को खोजकर उन्हें अपने परिवार और समाज का हिस्सा बनाते हैं – पति , पत्नी , भाई , बहन आदि के रूप में |"

"ऋषि विश्वामित्र ने लक्ष्मण की बात पर श्री राम जी की टिपण्णी का इन्तजार किया | लेकिन राम जी एक शब्द भी नहीं बोले | ऋषि विश्वामित्र आगे बोले – "हे दशरथ पुत्रो , सत्यसाधना की पहली चिंगारी से लेकर गुरु को समर्पण करने के बीच में जो समय होता है उसमे लगभग हर सत्यसाधक विद्रोह के दौर से गुजरता है | उस दौर में कोई निषाद साधक पृथु समाज द्वारा आयोजित किसी भी स्पर्धा से घृणा करेगा | उसके मन में ऐसे विचार आयेंगे – 'मेरी चेतना का स्तर मापने वाले पृथु कौन होते हैं' 'मेरी आत्मा की शुद्धि को प्रमाणित करने वाले पृथु कौन होते हैं' आदि आदि | मेरे विचार में केवल साधारण निषाद ऐसी स्पर्धाओं में हिस्सा लेते हैं | ऐसे निषाद पृथु स्तर तक तो पहुँच सकते हैं लेकिन ऋषि स्तर तक नहीं | क्या तुम कोई ऐसा नाम बता सकते हो जो ऐसी स्पर्धाओं के जरिये पृथु समाज का हिस्सा बना और फिर ऋषि स्तर तक पहुंचा ?"

"लक्ष्मण जी के पास इसका कोई उत्तर नहीं था | उन्होंने राम जी की ओर देखा | राम जी विचारपूर्वक बोले – "गुरुदेव , आदर्शतः पृथु और निषादों को वर्गीकृत करने की व्यवस्था होनी ही नहीं चाहिए |"

"ऋषि विश्वामित्र यही सुनना चाहते थे | उन्होंने अपनी संतुष्ट होने की भावना पर एक प्रश्न का पर्दा डाल दिया | उन्होंने पुछा – "बताओ राम , ऐसी किसी व्यवस्था की अनुपस्थिति में युवा ताड़का ब्रह्मज्ञान के रास्ते पर कैसे आती?"

"राम जी विनम्रता से बोले – "गुरुदेव , मेरे विचार में देवताओं को ताड़का और किसी पृथु के बीच स्वाभाविक रूप से सम्बन्ध स्थापित करने में भूमिका निभानी चाहिए थी | ऐसे सम्बन्ध से वह पृथु बन जाती और फिर किसी ऋषि से गुरुसम्बंध बनाकर वह सत्य को पा लेती |"

""युवा ताड़का को कोई मंत्र शलोक नहीं आते थे जिससे वह देवो का आह्वान करती | मासूम जानवरों की हत्या आदि की बुरी आदतों के कारण वह किसी देवता के ध्यान के योग्य नहीं समझी जा रही थी |"

""अगर वह बुरे काम करती थी तो आपकी उसके प्रति इतनी सहानुभूति क्यों है गुरुदेव?" लक्ष्मण ने मन ही मन सोचा लेकिन बोलने की हिम्मत नहीं की |

"हे मातांगो , राम जी इस पर कुछ नहीं बोले | हाँ , उन्होंने निश्चय जरूर कर लिया था कि उस क्षण के बाद उनकी अर्थात श्री विष्णु जी का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए एक शब्द का मंत्र काफी था | वह एक शब्द का मंत्र है 'राम'| एक छोटे बच्चे को भी यह मंत्र पता हो पायेगा | कोई भी आत्मा – फिर चाहे वह पशुओ की हत्या करने वाले निषाद परिवार से हो अथवा दयालु पृथु परिवार से – उनका मार्गदर्शन प्राप्त कर पाएगी अगर उसने गलती से भी इस मंत्र का उच्चारण कर लिया |"

"ऋषि विश्वामित्र ने ताड़का की कहानी को आगे बढ़ाया – "हे अयोध्या के राजकुमारों , देवताओं ने जिज्ञासु ताड़का की सुध नहीं ली | लेकिन असुरो के गुरु शुक्राचार्य ने ली | उस समय शुक्राचार्य के नियंत्रण में था सुमाली नामक एक राजा | शुक्राचार्य ने सुमाली और ताड़का का स्वाभाविक रूप से मिलन करवाया | सुमाली ने उससे शादी कर ली और उसे अपने राज्य में ले गया | वहां पर उसने उसे असुरी ज्ञान सिखाया – वह ज्ञान जो ऋषियों के ज्ञान जैसा शक्तिशाली है किन्तु गलत कामो के लिए प्रयोग होता है | सुमाली ने उसके साथ एक पुत्री को जन्म दिया जिसका नाम है कैकेशी | फिर योजना के मुताबिक़,शुक्राचार्य ने सुमाली और ताड़का का झगडा करवा दिया और फिर वे निर्दयी रूप से अलग कर दिए गए | सुमाली ने ताड़का को बहुत दिन तक सताया और फिर उसे यहाँ सरयू नदी के किनारे अकेले छोड़ गया | उसने ताड़का को उसकी बच्ची भी नहीं दी |"

"सुमाली के हाथो बर्बरता और फिर उससे अलग होने का ताड़का के मानस पर एक गहरा घाव छोड़ गया | उसने अपने घाव को संतुष्टि देने के लिए यहाँ सरयू नदी के किनारे असुरी ज्ञान का प्रयोग करके लोगो को सताना शुरू कर दिया | यहाँ पर उसने एक अन्य बुरे आदमी सुंडा से विवाह कर लिया और दो लडको को जन्म दिया – सुबाहु और मरीचि | सुंडा ऋषि अगत्स्य के कारण मारा गया | ताड़का ने सुंडा की मृत्यु का बदला पूरे ऋषि समाज से लेने की ठान ली | अब वह बहुत बूढी हो चुकी है और इस जंगल की सीमा के अन्दर ही रहती है | तब से आज तक वह इस जंगल से नहीं निकली है | किसी ऋषि का आमने सामने मुकाबला भी उसने नहीं किया है | लेकिन उसकी असुरी शक्तियां अब इतनी शक्तिशाली हैं कि इससे ऋषियों के ध्यान में भी बाधा पहुँचने लगी है | जंगल से निकले बिना वह ऋषियों से अपना बदला ले रही है |"

"ताड़का जंगल अब बहुत नजदीक था | ऋषि विश्वामित्र ने अपनी चाल धीमी कर ली ताकि वे उस सामजिक व्यवस्था के बारे में अपना व्याख्यान पूरा कर सकते जिससे वे घृणा करते थे | वे बोले – "दूसरी ओर , ताड़का की पुत्री कैकेशी की शादी विश्रवा ऋषि से हो गई | मैंने विश्रवा से जब यह पुछा कि उन्होंने इतनी बड़ी गलती कैसे की , तो वे बोले कि उन्होंने नियमो का पालन किया है | नियम कहते हैं कि ऋषि किसी राजा की पुत्री से विवाह कर सकते हैं फिर चाहे वह निषाद ही क्यों न हो | सब जानते हैं कि सुमाली दुष्ट है | फिर भी विश्रवा को विश्वास था कि वे उसकी पुत्री कैकेशी को निषाद स्तर से उठाकर ऋषि स्तर पर ले आयेंगे | उन्होंने उससे शादी ही नहीं की , उसके साथ पुत्र भी पैदा कर लिया, रावण नाम है उस पुत्र का | जब तक विश्रवा को अपनी भूल का अहसास हुआ , काफी देर हो चुकी थी | उन्होंने कैकेशी को छोड़ दिया और उसे वह पुत्र भी रखने दिया | कैकेशी अपने पिता सुमाली के यहाँ वापिस चली गई जहाँ रावण का पालन पोषण दुष्ट सुमाली की देख रेख में हुआ है | अब वह रावण व्यस्क हो गया है | एक ऋषि का पुत्र पालन सुमाली जैसे दुष्ट के हाथो ! घोर विपदा , मुझे कहना चाहिए | सब इस सामजिक व्यवस्था और 'नियमावली' के कारण |"

"लक्षमण ने मन ही मन सोचा – "ताड़का और उसकी बेटी कैकेशी दोनों निषाद थी | ताड़का को ब्रह्मज्ञान की प्यास थी किन्तु किसी ऋषि ने उससे विवाह नहीं किया क्योंकि वह राज परिवार से नहीं थी | दूसरी ओर , कैकेशी का ब्रह्मज्ञान से कोई लेना देना नहीं था फिर भी एक ऋषि ने उससे विवाह कर लिया क्योंकि वह राजपुत्री है | गुरुदेव का इस सामजिक व्यवस्था को कोसना सही ही है |"

"अयोध्या के राजकुमारों के पास समाज की व्यवस्था के बारे में सोचने का समय अभी नहीं था क्योंकि उनके सामने एक तत्काल और वास्तविक खतरा खड़ा था : ताड़का का जंगल | शुरू में यह एक साधारण जंगल ही लगा लेकिन जब वे अन्दर घुसे और वृक्षों की छाया पर एक नजर डाली तो उन्हें कुछ अजीब महसूस हुआ | ऐसा लगा जैसे जंगल के ऊपर एक नहीं दो मंद सूर्य थे | 'दो सूर्य या दो आँखें ... राक्षसी की आंखे?' इस विचार से लक्षमण के शरीर में कम्कम्पी दौड़ गई |

"जंगल की आवाजें साधारण स्त्रोतों से ही आ रही थी लेकिन वे जिस तरह से उनके कानो तक पहुँच रही थी , कुछ अजीब था | ऐसा लग रहा था जैसे आवाजे उनसे दूर खीची जा रही हो – दूर किसी विशाल वस्तु की ओर जो जंगल के बीच कही रखी थी | 'क्या राक्षसी हमारे कदमों की आवाजो को अपने विशालकाय कानो से सुन रही है?' लक्षमण ने सोचा |

"दोनों राजकुमारों ने अपने धनुष तैयार कर लिए और सावधानी से आगे बढ़ने लगे | उनकी अपने शत्रु से मुलाक़ात जल्द ही हुई लेकिन उनका शत्रु कोई विशाल राक्षसी नहीं थी जैसा वे सोच रहे थे | उनके दुश्मन थे बिलकुल उनके प्रतिरूप | उन तीनो के हुबहू प्रतिरूप उनके साथ कुछ ही दूरी पर चल रहे थे | ऋषि विश्वामित्र ने अपना सिर थोडा सा भी नहीं हिलाया | राजकुमार राम ने अपने प्रतिरूप को गुप्त दृष्टि से देखा लेकिन लक्षमण अपने प्रतिरूप की ओर एकटक देखने लगे | उन्हें ऐसा दिलचस्प अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था | इससे पहले कि उनकी आँखें अच्छे से उनके प्रतिरूप की आँखों से मिलती, ऋषि विश्वामित्र जरा भी मुड़े बिना जोर से फुसफुसाए – "शिव योग लक्षमण , शिव योग |"

""शिव आकर्षण और ऊब दोनों से परे हैं |" इस विचार ने लक्षमण के दिमाग में हथोड़े सा प्रहार किया और वे सीधे देखने लगे |

"ऋषि विश्वामित्र जोर से फुसफुसाए – "ये हमारी समरूप कृतियाँ ताड़का के दिमाग की उपज हैं | वह हमें यह विश्वास दिलाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देगी कि वे प्रतिकृतियाँ सत्य हैं और हम भ्रम | मैं आपको चेतावनी देता हूँ हे राजकुमारों , आप यहाँ स्वयं अपने भरोसे हो | मैं अधिक सहायता नहीं कर सकूँगा . शिव योग ही इस भ्रम का इलाज हैं जो आपको स्वयं करना पड़ेगा |"

""चिंता मत कीजिये गुरुदेव |" लक्ष्मण ने फुसफुसाकर उत्तर दिया – "मैं इनसे मनोरंजित हूँ , भ्रमित नहीं | केवल एक मूर्ख यह विश्वास कर सकता है कि वे सत्य हैं | वे हमारी नक़ल कर रहे हैं – जब हम बोलते हैं तो वे बोलते हैं , वे वही देखते हैं जो हम देखते हैं , वही करते हैं जो हम करते हैं | उनके बारे में कुछ भी मौलिक अथवा वास्तविक नहीं है |"

"ऋषि विश्वामित्र ने लक्ष्मण की ओर देखकर बोंहे चढ़ाई और शांति किन्तु बलपूर्ण हावभाव से बोले – "जल्द ही तुम ये भूल जाओगे कि कौन किसकी नक़ल कर रहा है | तुम भूल जाओगे कि कौन वास्तविक है | सत्य-लक्ष्मण गायब हो जाएगा और भ्रम-लक्ष्मण को तुम्हारी आत्मा सत्य मानकर अपना लेगी और फिर तुम ताड़का के दास बन जाओगे उन सैकड़ो दासो की तरह जो इस जंगल में रह रहे हैं | बचकानी हरकते मत करो और शिव योग करो |"

"हे मातांगो , इसके पीछे एक कारण था कि अयोध्या के राजकुमार नंगे पाँव ऋषियों की भांति ताड़का का मुकाबला करने आये थे | क्योंकि न ही ऋषि, न ही योद्धा , न ही देवता और न ही मनुष्य ताड़का को हरा सकता था | केवल ऐसा तत्व उसे हरा सकता था जो ऋषि ,योद्धा , देव और मनुष्य एक साथ हो | राम और लक्ष्मण की जोड़ी वह तत्व था | इसलिए लक्ष्मण और उनकी साधारण मानव सी गतिविधियाँ राम जी के उपर बोझ नहीं बल्कि खूबी थी |

"ताड़का के जंगल के वनवासी साधारण लग रहे थे | राजकुमार राम ने चारो ओर नजर घुमाई तो उन्होंने 2-3 पुरुषो को एक पेड़ के नीचे आराम करते देखा , 4-5 बच्चों को पास में खेलते देखा , और एक औरतों के झुण्ड को अन्य वृक्ष के नीचे कंकडों का खेल खेलते देखा | देखने से नहीं लग रहा था कि उनके ऊपर कोई ज्यादती हो रही हो | वास्तव में वे अन्य जंगलों के वनवासियों से अधिक स्वस्थ दिखाई दे रहे थे |

""सुनिए ! आपको यहाँ पहले कभी नहीं देखा | आप इस जंगल में पहली बार आये लगते हैं |" एक वनवासी जो राजकुमार राम से दोगुनी उम्र का था आगे बढ़ रहा था – राम , लक्ष्मण और विश्वामित्र के प्रतिरूपों की ओर |

""ऐसा लगता है कि हम यहाँ के लोगो को दिखाई नहीं दे रहे हैं |" लक्ष्मण जी धीमे से बोले

""हाँ , उन्हें केवल हमारे माया रूप दिखाई दे रहे हैं , ताड़का द्वारका रचे गए माया रूप |" राजकुमार राम बोले |

"माया-राम ने अजनबी वनवासी को उत्तर दिया – "हाँ , हम पहली बार इस जंगल से गुजर रहे हैं | मेरा नाम है राम …"

""… और मेरा नाम है लक्ष्मण |" माया-लक्ष्मण ने जोड़ा |

"अजीब बात ये हुई कि जब माया-लक्ष्मण ने ये बोला, सत्य-लक्ष्मण को भी बिलकुल यही बोलने की इच्छा हुई | उन्होंने अपने होंठो में गति महसूस की ओर मन ही मन बिलकुल वही शब्द बोले – '… और मेरा नाम है लक्ष्मण |'

"ऋषि विश्वामित्र ने ध्यान किया कि लक्ष्मण ताड़का के जाल में फंस रहे थे | वे बोले – "शिव योग लक्ष्मण , शिव योग | शिव जैसे बनो जो प्रश्न और उत्तर दोनों से अलग और उदासीन हैं | यह मनुष्य जो प्रश्न पूछ रहा है उनसे उदासीन रहो |"

"तीनो के माया रूप उस वनवासी के पास आकर रुक गए | उनके सत्य रूपों को भी रुकने की इच्छा हुई | सत्य-राम ने कहा – "हमें अपने माया रूपों की नक़ल करने की तीव्र इच्छा का सामना करना पड़ रहा है | क्या उनके साथ भी ऐसा ही हो रहा है?"

""और आपका नाम क्या है वनवासी?" सत्य-राम ने अपने सामने वनवासी के खड़े होने की कल्पना करते हुए जोर से कहा |

"दिलचस्प था कि उनके माया-रूप ने बिलकुल वही शब्द बोले -"और आपका नाम क्या है वनवासी?"

"वनवासी अचानक अशिष्ट हो गया | वह चिल्लाया – "घुसपेठियों को मेरा नाम जानने की जरूरत नहीं है |"

"सत्य राम बोले – "हे भैया , मैं अयोध्या का राजकुमार हूँ और मैं आपको इस ताड़का राक्षसी से मुक्ति दिलाने आया हूँ |"

"इस बार माया-राम ने बिलकुल वही शब्द नहीं बोले | उसके शब्द थे – "हे नीच निषाद, मैं यहाँ तुम्हे मारने आया हूँ , और इस जंगल में रहने वाले अन्य निषादों को भी क्योंकि निषाद धरती पर बोझ हैं |"

"सत्य-विश्वामित्र बोले – "देखा , हमारे माया रूप हमारी नक़ल नहीं कर रहे हैं | वे वही कह रहे हैं जो ताड़का चाहती है |"

"सत्य राम शांति से बोले – "गुरुदेव , मुझे लगता है हमारा हमारे माया रूपों पर थोडा बहुत नियंत्रण तो अवश्य है | अगर हम कुछ बोलते हैं तो वे भी बोलने को होते हैं , शब्द चाहे ज्यों के त्यों क्यों न हो | वे हमारी नक़ल कर रहे हैं लेकिन बीच में ताड़का यह नियंत्रण कर रही है कि वे क्या पूर्णतः नक़ल करे और क्या नहीं … ओह …" सत्य-राम दर्द से कराह उठे | उन्हें महसूस हुआ जैसे किसी ने उन पर लाठी से वार किया हो | असल में वनवासी ने माया-राम पर वार किया था लेकिन सत्य-राम को भी दर्द हुआ | उन्होंने तुरंत शिव योग करके अपने आपको दर्द से अलग किया |

""घुसपेठीये … अत्याचारी …" वनवासी चिल्लाया और माया-राम पर एक और प्रहार करने की कोशिश की लेकिन ये प्रहार माया-लक्षमण को लगा | सत्य-लक्षमण भी दर्द से कराह उठे | उन्हें लगा जैसे किसी अदृश्य चीज से उन पर वार हुआ हो | उन्होंने हवा में घुस्से चलाने शुरू कर दिया | सत्य-राम ने उनको चेताया – "हे लक्षमण , इस दर्द पर प्रितिक्रिया मत दो | शिव योग करो | शिव जैसे बनो जो दर्द और सुख दोनों से उदासीन हैं | ऐसे मान लो कि सब कुछ ठीक है और आगे बढ़ते रहो |"|

"बहुत सारे वनवासियों ने अब राम , लक्षमण और विश्वामित्र के माया रूपों को घेर लिया था और उनके हाथ में जो कुछ भी था उससे प्रहार कर रहे थे |

"दर्द उनके सत्य रूपों को भी हुआ | राम और विश्वामित्र जी ने तो शिव योग करके स्वयं को दर्द से दूर कर लिया लेकिन लक्षमण जी नहीं कर पाए | वे धरती पर गिर गए थे , सिर को हाथो से ढक लिया था और हवा में पैर चला रहे थे | राम जी ने घुटनों के बल बैठकर उनको जोर से हिलाया और बोले – "मेरी बात सुनो लक्षमण , कोई नहीं मार रहा है तुम्हे | वे तुम्हारे माया रूप को मार रहे हैं , तुम्हे नहीं | देखो ,तम्हारे शरीर पर खरोंच तक नहीं आ रही है | सब ठीक है | केवल अपने आपको इस दर्द से दूर कर लो शिव योग से | चलो उठो | ओह …"

"राजकुमार राम को पुनः दर्द होने लगा | वे खड़े हुए , गहरी साँसे ली और शिव योग किया | विश्वामित्र बोले – "अगर हम लक्षमण की सहायता करने की कोशिश करते हैं तो हम भी उसकी तरह कमजोर हो जायेंगे और ताड़का के जाल में फंस जायेंगे | हमें उसे छोड़ना होगा | चलो राम , हमें ऐसे मानना है कि सब सही है और आगे बढ़ते जाना है |"

"उन्होंने दर्द से कराहते सत्य-लक्षमण को वही छोड़ दिया | ऐसा करना राजकुमार राम के लिए आसान नहीं था | वे लक्षमण से इतने जुड़े हुए थे कि उन्हें बिलकुल भी कष्ट में नहीं देख सकते थे | लेकिन ताड़का के जंगल में उन्होंने जबरदस्त अनासक्ति और शिव योग शक्ति का परिचय दिया | वे अपने भाई से दूर चलते चले गए जो ताड़का के जाल में फंसता जा रहा था |

"सत्य-लक्षमण की चीखें कुछ समय बाद थम गई क्योंकि अब सत्य-लक्षमण थे ही नहीं | वे गायब हो गए था | अब केवल माया-लक्षमण था जो अचेत पड़ा था गुस्साए वनवासियों के बीच | वे वनवासी जो ताड़का के दास थे |

"सत्य राम जैसे जैसे ताड़का के जंगल के अन्दर जाते चले गए , उन्हें आशा थी कि वे अब कम से कम माया-राम को नहीं देखेंगे जिसको गुस्साए वनवासियों ने जंगल के शुरू में ही घेर लिया था | लेकिन वे गलत साबित हुए | जैसे वे जंगल के केंद्र में पहुंचे, जहाँ उन्हें ताड़का और उसके लडको का सामना करना था , उन्हें माया-राम फिर से दिखाई दिए , माया-लक्षमण के साथ | वे बुरी तरह घायल थे और अच्छे से चल भी नहीं पा रहे थे | वे चिल्ला रहे थे – "आ ...और ...मुकाबला ...कर ...हे कायर ताड़का .. आ ... "

"माया-राम और माया-लक्षमण की इच्छा जल्द ही पूरी हो गई जब उनका सामना वृक्ष जितने आकार के 3 जीवो से हुआ | वे थे – ताड़का , सुबाहु और मरीचि |

"जैसे ही माया-राम और माया-लक्षमण ने अपने धनुषो से उन दैत्यों पर निशाना साधा , सत्य-राम ने विश्वामित्र जी से कहा – "गुरदेव , ये ताड़का और उसके लडको के असली रूप नहीं हैं , नहीं हैं ना? इनके साथ लड़ाई करने का मतलब होगा ताड़का के जाल में फंसना | इनके असली रूप कहाँ है?"

""उनके असली रूपों को ढूंढना ही तो काम हैं जिसके लिए मैं तुम लोगो को यहाँ लाया हूँ |" ऋषि विश्वामित्र संक्षिप्त रूप से बोले | थोडा रूककर उन्होंने राम जी को सुझाया – "ब्रह्मा योग|"

"राजकुमार राम पास के एक पेड़ के नीचे बैठ गए | उन्होंने पहले शिव योग से अपनी इन्द्रियों को बाहरी संसार से बंद कर लिया : ताड़का और उसके लडको के माया रूप की हंसी , माया-राम और माया-लक्षमण का उन पर प्रहार , और अंततः पूरा जंगल उनके लिए गायब हो गया | उसके बाद उन्होंने ब्रह्म योग किया |

"अपनी समस्त आत्म शक्ति से राम जी ने निश्चयपूर्वक दावा किया – "मैं राम नहीं हूँ , मैं रामलक्षमण हूँ | राम और लक्षमण दो नहीं , एक हैं और मैं वो हूँ |"

"कुछ समय बाद एक थरथराता श्वेत प्रकाश प्रकट हुआ जो लक्षमण के रूप में आ गया | सत्य-लक्षमण अब वापिस आ गए थे और वो अकेले वापिस नहीं आये थे | "भ्राता राम , मैंने ताड़का और उसके लडको के सत्य रूप को देखा है | देखो वे रहे वे |"

"जहाँ पर पहले 3 दैत्याकार जीव खड़े थे , अब वहां 2 अधेड़ उम्र के पुरुष खड़े थे और उनके पीछे छुपी थी एक कमजोर सी वृद्ध महिला जो अच्छे से खड़ा भी नही हो पा रही थी | दोनों पुरुष भाला ताने हुए थे | उनमे से एक ने भाला फेंक दिया लेकिन इससे पहले कि वह लक्ष्य पर पहुँचता , लक्षमण ने तीर चला गया जिसने पहले भाले को काटा और फिर उसे चलाने वाले मनुष्य की गर्दन को | सुबाहु धरती पर गिर गया , मृत | दूसरा पुरुष डर गया और वहां से भागने लगा | लक्षमण ने एक और तीर से निशाना साधा और क्रोध में चिल्लाये – "मेरा सामना करो , कायर |"

""उसे जाने दो लक्षमण | यह कठपुतली हमें इसके मालिक तक पहुंचाएगी |" राम जी ने देवत्व की आभा के साथ कहा |

"ताड़का और उसके लड़के शुक्राचार्य की कठपुतली मात्र थे | जब उनसे उनकी असुरी शक्तियां छीन गई वे साधारण मनुष्य बन गए | ताड़का ऐसे लग रही थी जैसे उसे सालो तक कही अँधेरे कमरे में बंद रखा गया हो | वह मुश्किल से सांस ले पा रही थी | उसने अपने पुत्र की मृत देह को एकटक देखा और फिर धीरे धीरे अपना सिर उठाया | जब उसकी छोटी छोटी आँखें राजकुमार राम की आँखों से एक पल के लिए मिली , वह भी गिर गई , मृत |

"उसका दूसरा पुत्र मरीचि जिसे वहां से भागने दिया गया , उसने बाद में माता सीता के अपहरण में अहम भूमिका निभाई जिसके बाद अंतिम युद्ध हुआ |" हनुमान जी ने विराम दिया |

अब जबकि यजमान प्रणव की आत्मा शुद्ध हो गई थी , बाबा मातंग ने उसके लिए अर्पणं की प्रक्रिया शुरू की |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
534979	Rs. 108	Successful	17/11/2016 - 07:42

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print